भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लए २५-३१ जुलाई २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबं धत राज्यों के राज्य कृषि व कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

	जुलाई २०१६														विश्वविद्यालयों
	वास्त वक वर्षा (ममी)									मौसम वभाग संभा वत वर्षा (ममी)					सलाह
दिनांक	मौसम (१४-२० जुलाई)	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
पंजाब															फाजिल्का जिले में 20 गावों में भटिंडा में 06 , बरनाला में 01 , संगरूर में 01, फरीदकोट में 06 तथा मुक्तसर जिले में 04 गावों में सफ़ेद मक्खी की संख्या आ र्थक हानि स्तर से ऊपर पाई गई| निम्न कीटनाशकों की सफ़ारिश की जाती है: डाइफेंथ्युरॉन @200 ग्रा./एकड़ सफ़ेद मक्खी प्रोढ़ों के लए अथवा स्पिरोमे सफेन अर्भकों अर्भकों (निंफ) की संख्या के लए अथवा फ्लोनीके मड सफ़ेद मक्खी तथा जै सड दोनों के म श्रत ग्रसन के लए	जै सड का प्रकोप 4 से 6/पत्ती के मध्य सभी स्थलों पर दर्ज कया गया	कपास स्वास्थ्य प्रबंधन युक्तियाँ-2016-17 ' में सफ़ारिश कए नियंत्रण उपायों को अपनाएँ| कपास तथा खरपतवारों पर खेतों में सफ़ेद मक्खी के लए निय मत निगरानी करते रहें तथा खरपतवारों को स मय पर निकालते रहें	यदि भारी वर्षा अथवा संचाई के बाद आकस्मिक मुरझान रोग आ गया है तो पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय की सफारिशों के अनुसार इसका प्रबंधन 10 पीपीएम कोबाल्ट क्लोराइड (10 मग्रा./लीटर पानी) के घोल से लक्षण दिखाई देने के कुछ घंटों के अन्दर ही प्रभा वत पौधों की
हरियाणा															
राजस्थान															
भटिंडा	24	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	5	5	0	
फरोजपुर	22	0	0	0	0	0	6	1	0	0	5	5	3	0	
मुकतसर	47	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	4	5	0	
मानसा	58	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4	3	10	6	
सरसा	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0	6	0	9	4	
हिसार	49	12	0	0	0	0	0	0	0	0	4	0	7	29	
फ़तेहाबाद	34	3	0	0	0	0	0	0	0	0	4	3	8	15	
हनुमानगढ़	21	10	0	0	1	0	1	0	0	2	2	5	5	3	
श्रीगंगानगर	4	0	1	0	0	0	0	0	0	2	2	5	5	3	
बांसवाड़ा	29	12	0	0	0	0	11	12	1	5	7	7	6	4	

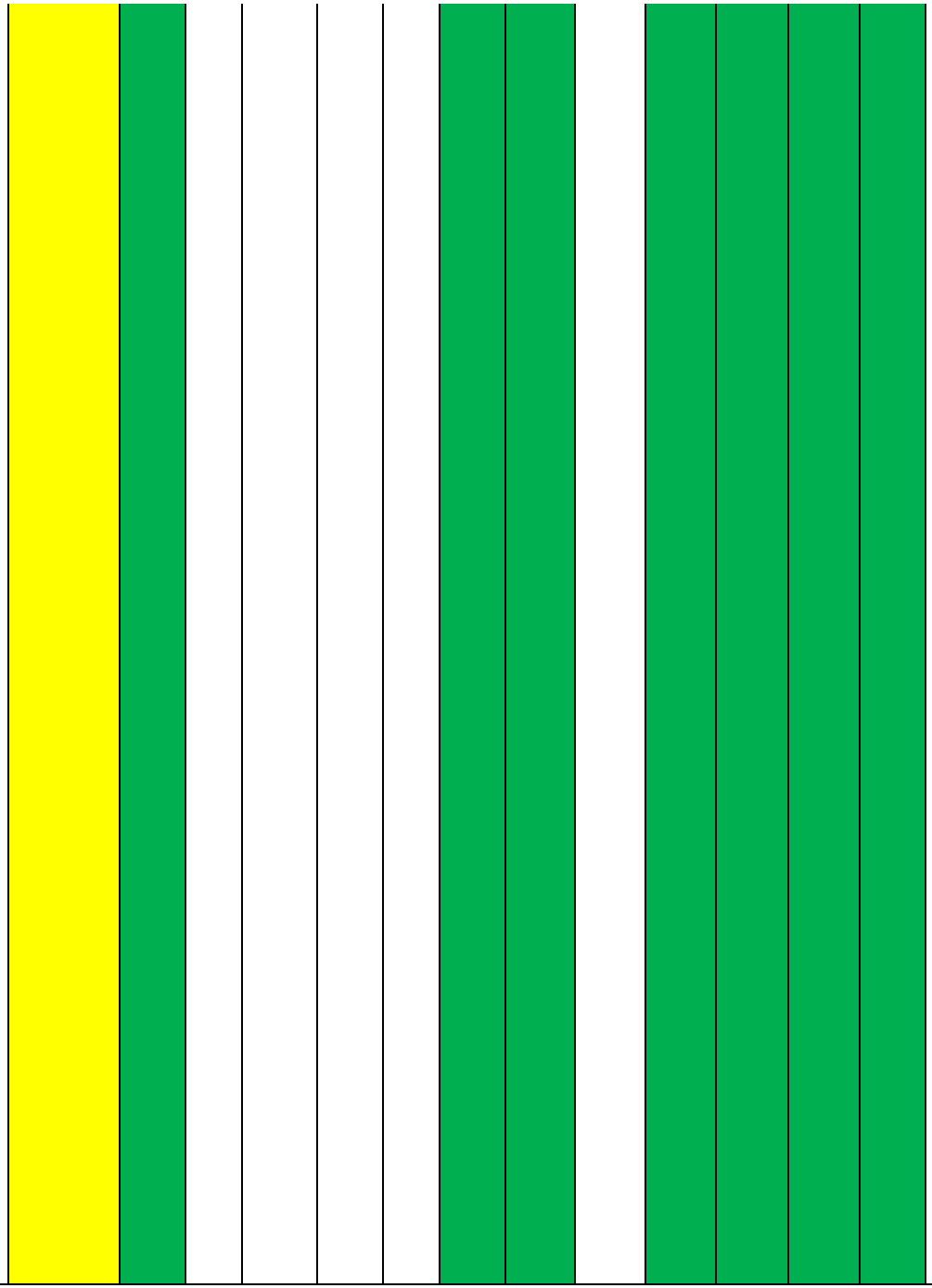

जड़ों के आस-पास की मृदा को तर करें| पछेती बुआई की गई फसल में नत्रजन की अंतिम एक तिहाई वखं डत मात्रा(40 से 45 कग्रा. यूरिया/एकड़) का अनुप्रयोग करें| हिसार में फसल सामान्य है जो पुष्पन तथा फलन अवस्था में है | जै सड का ग्रसन देखा गया है| सरसा में फसल 65 से 80 दिनों की है जो वानस्पतिक से लेकर कली तथा पुष्पन अवस्था में है| निराई-गुड़ाई तथा अन्य अंत:सस्य क्रयाएँ चल रही हैं| वर्षा के बाद खेतों में खरपतवार का प्रकोप देखा जा रहा है | सफ़ेद मक्खी की संख्या आरसीएच-650बीजी II में 10-17/3 पत्तियाँ (औसत संख्या 14.2/3 एचएस-6 पर 11-23 के मध्य (औसत 17.7/3 पत्तियाँ) , गंगानगर अगेती में 5-11/3 पत्तियाँ (औसत 7.7/3 पत्तियाँ) दर्ज की गई है | जै सड की संख्या 5-8/3 पत्तियाँ के मध्य तथा फूलकीट(थ्रप्स)की संख्या21-39/3 पत्तियाँ के मध्य नियंत्रण-रहित स्थिति में पाई गई है| सरसा में कुछ कसानों के खेत पर सफ़ेद मक्खी की संख्या 4-10/3 पत्तियाँ एक सर्वेक्षण में रिकार्ड की गई है जो 22/07/16 को कया गया था | कसानों के खेतों में कई स्थलों पर जै सड की संख्या आ र्थक हानि स्तर को पार कर चुकी है| धब्बेदार सूँडी का प्रकोप देसी कपास में देखा गया है | कसानों के खेतों में ही कुछ स्थलों पर जड़ गलन तथा तना-जड़ ग्रीवा क्षेत्र में तने के काला पड़ने का रोग देखा गया है | खेतों में ही कपास पर्णकुंचन रोग भी देखा जा रहा है | नाशीकीटों की संख्या वृ द्ध के लए कसानों को निय मत रूप से फसल की निगरानी करने की सलाह दी जाती है | आवश्यकतानुसार नीम आधारित कीटनाशकों का निरमा पाउडर के साथ सफेद मक्खी की आ र्थक हानि सीमा के नजदीक संख्या वाले खेतों में अनुप्रयोग करें | जिन खेतों में सफ़ेद मक्खी तथा जै सड दोनों का प्रकोप है उनमें फ्लोनीके मड का @80 ग्रा. / एकड़ 150 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें| कसानों को सलाह दी जाती है क चत्तीदार गूलर

उड़ीसा															
कोरापुट	32	1	17	18	27	15	14	7	16	12	4	3	4	19	
कालाहांडी	99	5	16	9	7	3	18	4	16	19	6	5	5	18	
बोलांगीर	51	0	3	11	1	1	7	0	2	14	4	6	10	21	

की सूँडी का प्रकोप देसी कपास में यदि आ र्थक हानि स्तर से ज्यादा बढ़ता है तो छिड़काव प्रारंभ कर दें| कसान को नाइट्रोजन उर्वरकों की उ चत मात्रा का प्रयोग करने की भी सलाह दी जाती है| पोटे शयम नाइट्रेट(13:0:45) @ 2.0 कग्रा./ एकड़ 100 ली. पानी में घोलकर फसल की प्रारं भक पुष्पन अवस्था में छिड़काव करें| दूसरे पोषकतत्व योगों(नत्र:स्फुरद:पोटाश) का छिड़काव न करें| करें|

कपास की बुआई का कार्य शीघ्रतिशीघ्र पूरा करें| जमीन की अंतिम तैयारी के समय गोबर की खाद 5 टन/हे की दर से अनुप्रयोग करने की कसानों को सफारिश की जाती है| मृदा जांच रिपोर्ट के आधार पर उर्वरकों की सफारिश की गई मात्रा का प्रयोग करें | संकरों के लए उर्वरकों की सफ़ारिश की गई मात्रा 120:60:60 कग्रा. नत्र: स्फुरद:पोटाश प्रति हेक्टर तथा क़स्मों के लए 90:45:45 कग्रा. नत्र: स्फुरद:पोटाश प्रति हेक्टर है| आधार मात्रा: सम्पूर्ण स्फुरद+50% पोटाश+25% नत्र; पौधों का अंतर -सामान्य रोपण-90X60 सेमी. तथा सघन रोपण प्रणाली के लए 60 X10 सेमी है| हरी खाद के लए 25 कग्रा.सनई बीज /हे. की दर से कपास बुआई के एक दिन पश्चात कतारों के मध्य बोएँ तथा 25 से 30 दिनों बाद कतारों के मध्य ही जुताई/ गुड़ाई करके मला दें| बी जों को *एजोटोबेक्टर* तथा पीएसबी से @25 ग्रा. प्रत्येक/कग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें| कपास में अरहर की की अंत:फसल 8:2 कतारों के अनुपात में लगाएं| अरंडी, गेंदा तथा मक्का जैसी फांस-फसल कपास की फसल के चारों ओर लगाएँ | खरपतवार प्रबंधन के लए पेंडीमे थे लन 1.0 कग्रा/हे. की दर से बुआई के एक दिन बाद अंकुरण-पूर्व छिड़काव के रूप में खेत की म ी पर अनुप्रयोग करें| रस चूषक कीटों के प्रकोप को कम करने करने के लए नीम तेल @3 मली/ली. पानी की दर से छिड़काव करें| निराई का कार्य पूरा करें| आगामी कुछ दिनों में वर्षा होने की

															संभावना को ध्यान में रखते हुए उर्वरकों की पहली मात्रा मृदा में देकर म ी चढ़ाने के उपाय करें|
गुजरात															गुजरात के मुख्य कपास उत्पादक जिलों में वर्षा सामान्य से 30 से 70% कम दर्ज की गई है| रिपोर्टों के अनुसार समय पर बुआई 30% से भी कम क्षेत्रफल में हुई है	जुलाई 11 से पहले तक लगभग 13.65 लाख हेक्टर क्षेत्र में तथा 15 जुलाई से पहले 17.7 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में बुआई हुई है	वगत 3 वर्षों में गुजरात में प्रति वर्ष 28 से 29 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में कपास की बुआई हुई है| जुलाई 15 के बाद बुआई के गई फसल में स्पष्ट रूप से गूलर की गुलाबी सूँडी के प्रकोप की समस्या का सामना करना पड़ेगा| कसानों को सलाह जाती है क इस सप्ताह के बाद कपास की बुआई न करें| शीघ्र तथा समय पर बोई गई अल्पाव ध की फसल नाशीकीटों से बच जाती है तथा पुष्पन और गूलर निर्माण जैसी महत्वपूर्ण अवस्था में मृदा नमी भी प्राप्त कर लेती है| इसके परिणामस्वरूप आदानों की कम जरूरतों के साथ अ धक उपज मलती है| पछेती बोई गई फसल में गुलाबी सूँडी के प्रबंधन की आवश्यकता पड़ेगी	जूनागढ़ में फसल 21 दिनों की है	अंत:सस्य क्रयाएँ तथा निराई का कार्य चल रहा है	जै सड की संख्या आ र्थक हानि स्तर से कम (1.0/3 पत्तियां/पौधा) दर्ज की गई है| सूरत में फसल पौद अवस्था में है	रिक्त स्थानों की पूर्ती हो चुकी है| मानसून-पूर्व बोई गई फसल में गुलाबी सूँडी का प्रकोप रिकार्ड कया गया है| मानसून-पूर्व बोई गई फसल पुष्पन अवस्था में होने से फीरोमोन- ट्रेप फसल में स्था पत करके गुलाबी सूँडी का निरीक्षण करते रहें| ऐसे खेतों में गुलाबवत् फूलों को हाथ से एकत्र कर नष्ट करते रहें|
अमरेली	15	5	0	4	1	0	0	0	6	7	30	39	19	9	
भावनगर	17	4	3	6	0	0	1	1	4	5	20	21	9	6	
जामनगर	51	7	2	1	0	0	0	3	0	0	14	46	31	7	
राजकोट	22	4	6	0	1	0	0	0	1	3	30	39	29	9	
भरूच	55	9	30	2	0	0	4	0	3	16	44	20	18	10	
सबरकांठा	40	6	2	0	0	0	0	8	11	10	63	138	21	11	
सुरेन्द्रनगर	12	1	4	0	0	0	4	0	6	3	12	33	29	5	
अहमदाबाद	46	4	3	0	0	0	0	0	5	6	30	39	29	9	
वडोदरा	22	9	7	2	0	0	0	3	0	28	40	50	15	30	
पाटन	26	1	6	0	0	0	0	1	7	0	11	59	88	29	
मेहसाना	26	2	2	0	0	0	0	2	5	0	13	60	59	19	

मध्यप्रदेश														
खरगोन	26	10	5	1	0	0	4	6	0	16	61	7	5	5
धार	18	13	1	0	0	0	2	0	12	22	133	19	10	0
खंडवा	18	2	3	0	0	10	3	1	9	37	26	5	6	7

खण्डवा में फसल लगभग 54 दिनों की वानस्पतिक अवस्था में है| मोथा, बड़ी दूधी, दूबघास, लहसुवा तथा गाजरघास जैसे खरपतवारों का प्रकोप फसल में है जिसके प्रबंधन के लए सफारिश कए गए उपाय कए जा रहे हैं | जै सड का प्रकोप आ थक हानि स्तर से कम दर्ज कया गया है| रोगों का भी कोई प्रकोप नहीं है|

महाराष्ट्र														
धुले	7	6	0	0	0	0	0	0	0	10	50	15	6	23
नांदूरबार	29	7	9	3	1	2	1	7	0	14	65	18	9	23
जलगांव	33	16	7	0	0	4	1	3	11	14	33	7	8	9
अहमदनगर	6	1	3	1	3	4	8	14	13	14	18	26	20	33
औरंगाबाद	8	4	4	2	0	6	9	6	10	7	17	4	4	7
जालना	3	2	2	0	2	34	11	40	2	4	10	0	5	3
बीड़	17	10	5	1	29	4	11	5	21	9	6	6	9	9
नांदेड़	15	2	5	2	20	27	1	15	14	27	9	13	21	32
परभणी	12	2	6	0	18	19	9	23	7	12	10	9	11	8
हिंगोली	9	0	4	0	1	59	13	11	9	24	11	10	11	8
बुलढाना	13	8	2	0	0	25	16	29	16	12	16	6	4	3
अकोला	19	7	2	1	0	12	15	17	6	9	15	3	2	2
वा सम	24	7	1	1	0	58	1	12	20	14	16	4	5	2
अमरावती	27	10	10	0	1	21	12	9	38	23	15	4	2	1
यवतमाल	33	3	3	2	7	30	6	12	11	30	17	10	7	2
वर्धा	29	12	3	2	11	11	13	12	15	22	15	7	5	2
नागपुर	49	20	8	6	12	25	14	8	10	21	15	8	8	4
चंद्रपुर	27	3	3	6	25	24	2	8	15	30	11	12	11	6

खेतों की रिपोर्टों के अनुसार महाराष्ट्र में कपास की फसल एकदम स्वस्थ है| इस बात की सावधानी बरतने की आवश्यकता है क यूरिया की मात्रा का अनुप्रयोग सफारिशों के अनुसार हो| जै सड की समस्या से बचने के लए यूरिया की अ धक मात्रा का प्रयोग बिल्कुल न करें| अच्छे परिणामों के लए बुआई के समय पोटाश अथवा बुआई के 3 सप्ताहों के अंदर पोटाश तथा स्फुरद की पूरी मात्रा तथा नत्र की एक-तिहाई मात्रा का अनुप्रयोग करें| इसके बाद यूरिया की मात्रा तीन बराबर भागों में 20 से 25 दिनों के अंतराल पर पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था के दौरान अनुप्रयोग करें | उर्वरकों के अनुप्रयोग के समय मृदा नमी का होना आवश्यक है | यद्य प मराठवाडा में वर्षा 17-20 जून के मध्य हुई ले कन में मानसून का आगमन 23 जून को हुआ| इसके बाद आगामी 20 दिनों के लए वर्षा का वतरण समान रहा| जून 26 से पहले बोई गई फसल को अ धकतम ला भ मलेगा| यद्य प कपास की बुआई 25 जून से पहले सर्फ 2.35 लाख हेक्टर में ही सम्पन्न हुई है| इस प्रकार महाराष्ट्र में अभी तक कपास की बुआई लगभग 33 से 35 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में हुई है| जुलाई 2 तक 15 लाख हेक्टर में तथा 9 जुलाई तक 27 लाख हेक्टर क्षेत्रफल में बुआई पूरी हुई है| राज्य भर में पूरे फसलकाल में अच्छी वर्षा हो ने की तथा अच्छी उपज मलने की संभावना है| यद्य प 15 जुलाई के बाद बोई गई फसल वृ द्ध ठीक से नहीं होगी तथा कम से लेकर मध्यम स्तर की उपज हो सकती है | देर से बो ई गई बीजी II संकरों सहित फसल में गुलाबी सूँडी का प्रकोप होगा | अंत: यह

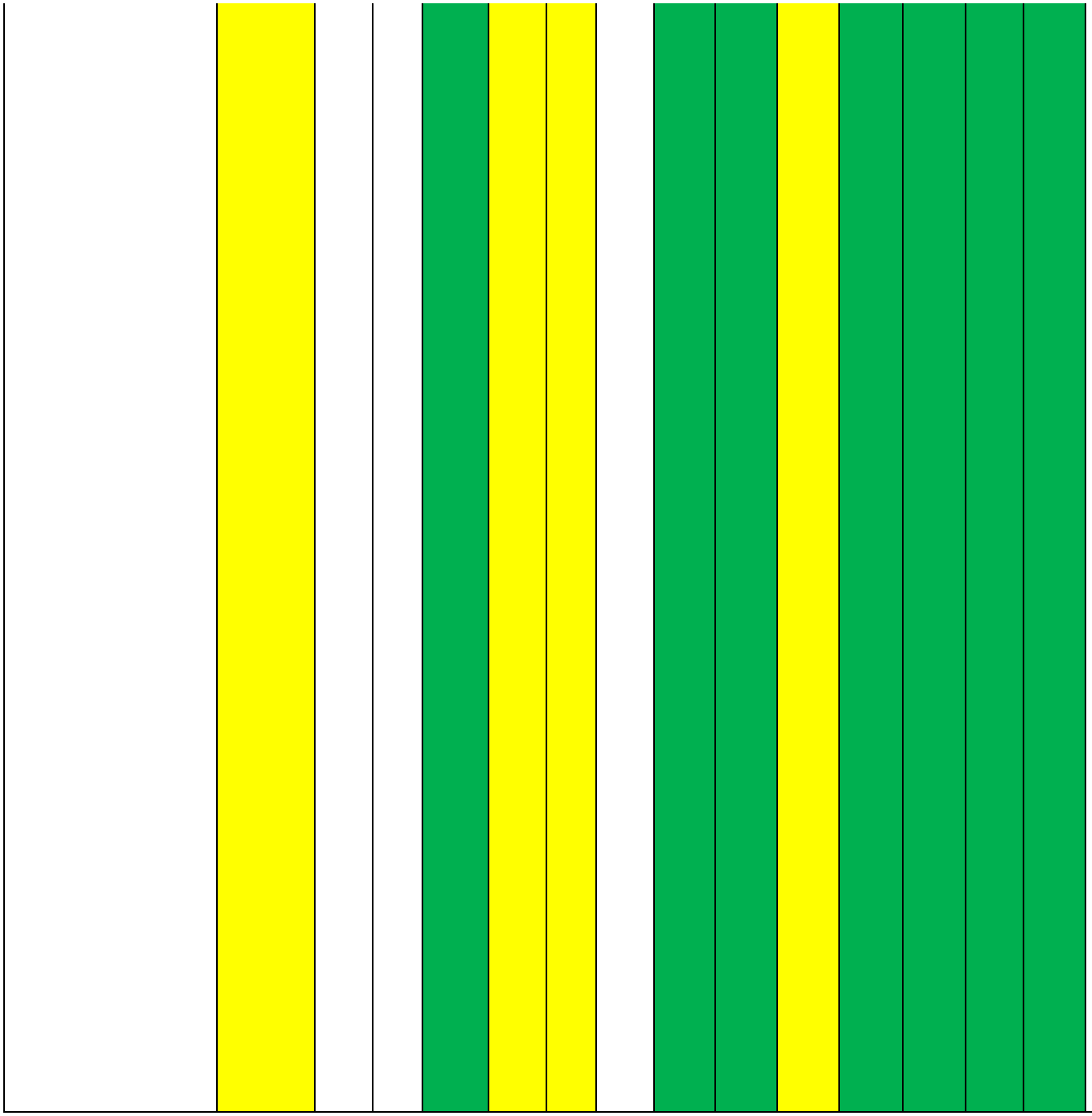

															सलाह दी जाती है क राज्य में अब आगे कपास की बुआई न करें। निराई तथा गुड़ाई का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। जून में बोई गई फसल में यदि बुआई के समय नत्र:स्फुरद:पोटाश की आधार मात्रा दी जा चुकी है तो जुलाई के अंतिम सप्ताह में की मात्रा एक बैग प्रति हेक्टर से अ धक न दें। अहमदनगर जिले में बुआई कार्य धीमे हुआ तथा पछेती बोई गई फसल जै सड से ग्र सत हो सकती है वशेषत: संवेदनशील बीटी संकर । नंदुरबार जिले में 50% से भी अ धक क्षेत्रफल में बुआई देरी से हुई है । गुलाबी सूँडी से पुष्पन अवस्था में अगस्त में समस्या पैदा हो सकती है जो अक्टूबर-नवंबर महीनों में गंभीर समस्या का रूप ले सकता है। इस कीट की निगरानी के लए अगस्त से ही आगामी महीनों के लए फीरोमोन ट्रेप फसल में स्था पत कर दें। एक समान पुष्पन तथा गूलर निर्माण को सुनिश्चित करने के लए कसी भी हालत में इमीडेक्लो प्र ड अथवा थायोमेथोक्जाम अथवा मोनोक्रोटोफॉस तथा अत्या धक यूरिया का अनुप्रयोग न करें । जै सड में इन कीटनाशकों के वरुद्ध प्रतिरोधकता निर्माण हो चुकी है और इ नका क लकायन अवस्था के प्रारम्भ में अनुप्रयोग करने से लाभदायक कीटों को मारकर पारिस्थितिकी को वच्छिन्न कर देते हैं बल्कि फसल परिपक्वता को भी वलंबित कर देते है । यूरिया के अ धक प्रयोग से जै सड का प्रकोप बढ़ जाता है। फसल पर रोगों का आगमन अभी तक नहीं हुआ है। रासायनिक कीटनाशकों की इस समय आवश्यकता नहीं है। संवेदनशील बीटी संकरों में तथा यूरिया का अ धक इस्तेमाल कए गए खेतों में जै सड संख्या देखी जा सकती है । नीम तेल का 10 मली/ली.+5ग्रा. डटेर्जेंट साबुन के साथ छिड़काव कया जा सकता सकता है। जलमग्न क्षेत्रों में मुरझान की समस्या देखी जा सकती है। मुरझान की प्रारं भक अवस्था में प्रभा वत पौधों की जड़ के पास म ी को कर्बेंडेजिम 50डब्लूपी के 50ग्रा. को 100 ली.पानी प्रति एकड़ की दर से इस घोल से तर करें। इसके साथ 10 लीटर

															पानी में 200 ग्रा. यूरिया के घोल का फसल पर छिड़काव करें । नांदेड़ में अंत:सस्य क्रयाएँ मौसम-पूर्व तथा बारानी फसल के रूप में पूरी करें। नत्र का मृदा अनुप्रयोग, सं चत फसल में, नत्र @60 कग्रा./हे. बुआई के 60 दिनों बाद तथा बारानी फसल के लए@36 कग्रा./हे. बुआई के 30 दिनों बाद रिंग व ध से अथवा छेद करके दें। फसल में वरलीकरण कर दें। खरपतवार प्रबंधन के लए हस्त-निराई अथवा खरपतवारनाशकों की सफारिश के अनुसार अनुप्रयोग "कपास स्वास्थ्य प्रबंधन युक्तियाँ-2016-17 " सीआईसीआर परामर्शी में दिए गए उपायों के अनुसार करें । कुछ सं चत खेतों में आकस्मिक मुरझान रोग के लक्षण देखे जा रहे हैं। अकोला में कुछ स्थानों में अ धक वर्षा हुई है तथा लघु क लयों का झड़न देखा गया है।
तेलंगाना															महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में वर्षा का वतरण असंतोषजनक तथा असमान है। दूसरे कपास उत्पादक जिलों में वर्षा पर्याप्त हुई । वारंगल , खम्म्म , महबूबनगर , तथा नालगोंडा जिलों में नमी संरक्षण उपाय करना अत्यावश्यक है । राज्य के कसी भी हिस्से से नाशीकीट अथवा रोगों की रिपोर्ट नहीं है । रासायनिक छिडकावों की कहीं भी आवश्यकता नहीं है। अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशक के रूप में पेंडीमेथे लन के प्रयोग की सफा रिश की गई है।
आदिलाबाद	18	7	8	3	0	28	2	7	27	10	15	4	15	35	
वारंगल	44	19	9	2	6	7	5	22	47	14	15	20	30	50	
खम्मन	51	15	23	3	8	6	4	7	5	25	20	30	25	20	
कारिंगर	14	2	6	1	0	7	0	14	27	18	15	20	30	50	
नालगोंडा	26	23	2	0	4	16	3	1	15	30	32	30	20	30	
महबूबनगर	21	12	8	11	1	4	4	8	4	15	15	14	15	25	
आंध्रप्रदेश															फसल 6 से 8 पत्तियों की अवस्था में है । अभी तक खरपतवारों, नाशीकीटों और रोगों का प्रकोप नहीं है। प्रकाशम जिले में बोई गई ग्रीष्मकालीन फसल वानस्पतिक से लेकर गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है । कपास की पहली चुनाई चल रही है । बिल के साथ वश्वसनीय बीज ही खरीदें । कुछ स्थानों में भू म की तैयारी चल रही है। अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशक के रूप में पेंडीमेथे लन की सफारिश की गई मात्रा का अनुप्रयोग कर सकते हैं । पर्याप्त मृदा नमी के उपलब्ध होने पर बुआई के कार्य कए जाएँगे।
गुन्टूर	37	28	1	0	1	1	0	0	4	30	25	20	20	12	
प्रकासम	20	9	0	2	0	0	1	7	1	30	35	20	20	12	

कर्नाटक														
धारवाड़	10	1	2	9	3	6	4	5	1	7	8	8	7	7
हवेरी	4	0	2	14	3	4	7	8	0	7	4	8	12	9
मैसूर	17	3	0	7	2	1	0	2	4	12	18	18	18	9

सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में बीटी कपास की बुआई का कार्य पूरा पूरा हो गया है| अ धकांश भागों में फसल 30 से 40 दिनों की है| हवेरी तथा बेलगाम जिलों में अगेती बोई गई फसल 40 से 45 दिनों की है तथा फसल शीर्ष वृ द्ध अवस्था में है| अगेती बोई गई फसल में अंत:स स्य क्रयाएँ, हस्त निराई और उर्वरकों की आधार मात्रा का अनुप्रयोग पूरा हो चुका है | पहला मृदा अनुप्रयोग 25 कग्रा. यूरिया और 25 कग्रा. पोटाश प्रति एकड़ के साथ पूरा हो चुका है| वगत सप्ताह के दौरान अंत:सस्य क्रयाएँ दोहराने तथा एक हस्त निराई द्वारा खरप तवारों की रोकथाम की गई | परिस्थिती में अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशक क्वीजालोफोप ईथाइल @1.0 मली/ली तथा पायरीथायोबैक सो डयम @ 0.8 मली/ली. पानी (टैंक म श्रत) का अनुप्रयोग एक बीजपत्री तथा द् वबीजपत्री खरपतवारों के नियंत्रण के लए बुआई के 25 से 30 दिनों पश्चात करने का सुझाव दिया जाता है | हवेरी तथा धारवाड़ जिलों के अ धकांश भागों में रसचूषक कीटों तथा प्ररोह-घुन का प्रकोप रिपोर्ट कया गया है | प्ररोह-घुन के प्रबंधन के लए प्रोफेनोफॉस @2.0 मली/ली. पानी की दर से छिड़काव करें तथा प्रौढ़ भृंगों को हाथ से चुनकर नष्ट करें | प्रौढ़ भृंग कपास के पौधे के ऊपरी भाग में प्रात:काल में आश्रय लेते हैं | कसी भी रोग का फसल पर प्रकोप दर्ज नहीं कया गया है | जुलाई के अंत तक बुआई कार्य पूरा करने की सलाह दी जाती है| चालीस दिन पुरानी फसल में उर्वरकों का मृदा में स्थल अनुप्रयोग@25 कग्रा. यूरिया तथा 25 कग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ की दर से करें | इसके साथ ही उर्वरकों के बेहतर उपयोग के लए पौधों पर म ी चढ़ाएँ| रायचूर तथा आस-पास के क्षेत्रों का 60% क्षेत्रफल कपास से आच्छादित है जो 20 से 25 दिनों की है| पेंडीमेथे लन@ 3.33 ली /हे के फसल की प्रारम्भिक अवस्था में अंकुरण-पूर्व अनुप्रयोग की सफ़ारिश की जाती है| फूलकीट(थ्रप्स) तथा जै सड का प्रकोप

															कुछ क्षेत्रों में देखा जा रहा है	"कपास स्वास्थ्य प्रबंधन युक्तियाँ 2016-17" भा.कृ.अनु.प-सीआईसीआर परामर्शी की सफ़ारिशों के अनुसार कसानों को नियंत्रण उपाय करने की सलाह दी जा रही है।
ता मलनाडु															कपास की बुआई का कार्य प्रगति पर है	बोई गई फसल अंकुरण अवस्था में है	शेष क्षेत्रों में हल्की वर्षा के पूर्वानुमान के साथ बुआई का कार्य कया जा सकता है	प्रारम्भिक जुताई का कार्य कया गया है।
पेरंबलुर	16	0	0	1	0	0	0	14	1	26	12	18	6	16	
सलेम	22	8	0	9	0	0	2	7	47	30	10	18	6	9	
त्रिची	44	0	0	3	0	0	0	7	18	38	9	26	16	12	
वरडुनगर	18	1	0	0	0	0	0	0	1	8	5	22	10	5	

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. संह, डा. संगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. वश्लेष नगरारे, डा. ऋ ष कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. स चता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अ धकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)